



समस्या बन गया है रोज़गार के मुद्दे का समाधान

drishtias.com/hindi/printpdf/tough-to-solve-jobs-issue

संदर्भ

वर्तमान में भारत के समक्ष रोज़गार से जुड़ी कई जटिल चुनौतियाँ विद्यमान हैं क्योंकि ऐसे क्षेत्र (जैसे- सूचना प्रौद्योगिकी, निर्माण और कृषि) जिन्होंने विगत वर्षों में देश में रोज़गारों का सृजन करने में योगदान किया है, अब चिंता का विषय बने हुए हैं।

प्रमुख बिंदु

- वस्तुतः पर्याप्त संख्या में रोज़गारों का सृजन करने के लिये 8 से 10% आर्थिक वृद्धि की आवश्यकता होगी।
- मुख्य आर्थिक सलाहकार के अनुसार, रोज़गार सृजन की दिशा में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र (जिसे भारत का गतिशील क्षेत्र माना जाता था) एक बड़ी समस्या बन चुका है।
- वस्तुतः आर्थिक विकास के लिये रोज़गार एक महत्त्वपूर्ण विषय है अतः सरकार इस पर अधिक ध्यान केन्द्रित करती है तथा इसे गंभीरतापूर्वक लेती है। परन्तु इसका पता लगा पाना मुश्किल है कि किसी क्षेत्र में रोज़गार से संबंधित समस्या उत्पन्न हो चुकी है।
- इसके लिये सरकार को सर्वप्रथम अर्थव्यवस्था की विकास दर को 5 से 10% तक लाना होगा क्योंकि यदि गतिशीलता आएगी तो रोज़गारों का सृजन होगा। वास्तव में यह महत्त्वपूर्ण भी है क्योंकि जब तक आर्थिक वृद्धि दर 3 से 4% के मध्य रहेगी तब तक रोज़गारों का सृजन नहीं किया जा सकता। इसके लिये भवन अवसंरचना में निवेश, निजी निवेशों के नवीकरण और बैंकिंग क्षेत्र की समस्याओं के समाधान की आवश्यकता होगी।
- भारत में वर्ष 2000 आर्थिक विकास का समय था जिससे आर्थिक विकास के तीनों क्षेत्रों में रोज़गारों का सृजन हुआ और इन क्षेत्रों ने काफी अच्छा प्रदर्शन भी किया। इन क्षेत्रों में कृषि, निर्माण और आईटी क्षेत्र शामिल हैं। वर्तमान में ये तीनों क्षेत्र चिंता का विषय बन चुके हैं। अब, भारत को निर्माण, कृषि और आईटी क्षेत्र में कार्य करना होगा।